निदेशक की कलम से.....

भारत के ग्रामीण एवं आदिम क्षेत्रों में रहने वाले लाखों करोडों के मध्य कला के प्रोत्साहन, विकास के ध्येय से 1985–1987 में एक प्रसार तंत्र के रूप में क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्रों की स्थापना की गई। इन केन्द्रों की परिकल्पना किसी बंद सभागार में सीमित लोगों के समक्ष कला प्रदर्शन कराने वाली संस्था के रूप में नही होकर अपितु सम्पूर्ण भारत के लोगों को प्रेक्षक व दर्शक मानते हुए एवं ग्राम्यांचल के हजारों लोक कलाकारों व शिल्पकारों को उनके क्षेत्र सीमाओं से बाहर कला प्रदर्शन का अवसर देने वाले केन्द्र के रूप में की गई है।

पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र कदाचित् ऐसा पहला केन्द्र है जिसने उदयपुर में शिल्प परिसर **शिल्पग्राम** की स्थापना की। जिसमें भारत के पश्चिमी राज्यों राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र तथा गोवा की पारंपरिक वास्तु कला, शिल्प परंपरा तथा लोक संस्कृति को दर्शाने वाली 31 पारंपरिक झोंपड़ियां बनाई गई हैं।

पश्चिमी क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में सांस्कृतिक आयोजनों की श्रृंखला के साथ ही उदयपुर के शिल्पग्राम में हर वर्ष दिसम्बर के अंतिम सप्ताह में **शिल्पग्राम उत्सव** का आयोजन किया जाता रहा है। 10 दिन के इस उत्सव जिसमें जहां देश भर से 650 से ज्यादा लोक कलाकार तथा शिल्पकार भाग लेते हैं वही लाखों लोगों द्वारा उत्सव की सांस्कृतिक प्रवृत्तियों को निहारा जाता है।

पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र का मुख्यालय 18 वीं शताब्दी में मेवाड़ राजपरिवार के प्रधानमंत्री द्वारा निर्मित ऐतिहासिक बागोर की हवेली में स्थित है। इस हवेली का अपना अनूठा वास्तु शिल्प है जिसमें कांच की कलात्मक कारीगरी तथा भित्ती चित्र हैं। 5 वर्ष के पुर्ननवीकरण कार्य के उपरान्त बागोर की हवेली में संग्रहालय सृजित कर राजसी जीवन शैली तथा सांस्कृतिक मान्यताओं को सावधानीपूर्वक संरक्षित कर इसके स्वरूप को निखारा गया।

मैं आपको इस वेबसाइट पर आमंत्रित कर आपसे अनुरोध है कि अपनी प्रतिक्रिया एव रचनात्मक सुझाव हमें प्रेषित करें।

शुभ यात्रा

(एल.एन.मंत्री)